संस्कृत के शक्ति स्त्रोत साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

(शतक काव्यों के विशेष सन्दर्भ में)

गजानन्द सैन

शोधार्थी, गुरूगोविन्द जनजाति विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.)

एवं प्रवक्ता, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज.)

मुकेशी बाई मीना

प्रवक्ता, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज.)

प्रस्तावनाः

संस्कृत साहित्य बहुत ही विशाल एवं समृद्ध हैं संस्कृत साहित्य लौकिक और वैदिक दो भागों में बांटा गया है। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद (ऋक्, यजु साम, अर्थ्य) ब्राहमण ग्रन्थ उपनिषद्, स्मृति ग्रन्थ, पुराण आदि समाविष्ट है। वैदिक साहित्य की भान्ति लौकिक साहित्य का क्षेत्र भी विस्तृत और समृद्ध है। इसके अन्तर्गत महाकाव्य, रामायण, महाभारत, गद्यकाव्य, पद्यकाव्य, चम्पूकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य इत्यादि शामिल किए गए हैं। पद्यकाव्य के अन्तर्गत विद्वानों ने शतक काव्यों के नाम से भी रचनाएँ की है।

"शतक काव्य" जैसा कि नाम से ही सर्वविदित है कि कोई भी ऐसा काव्य जो 100 (शतक) सी पचों का समूह हो, वही शतककाव्य कहलाता है। शतककाव्यों की परम्परा कब कहाँ और कैसे शुरू हुई? इस विषय में कुछ भी कहना कठिन है, क्योंकि प्राचीन काल से ही किसी भी विषय पर 100 पद्यों की रचना करके उसे शतक का नाम देने की परम्परा चली आ रही है।

लगभग 2000 वर्षो से एक ही विषय पर लिखे गए 100 पद्यों को उस विषय का नाम देकर शतक नाम देने की परम्परा चली आ रही है संस्कृत साहित्य में 100 पद्यों की रचना शतक, पचास पद्य लिखकर पंचाशिका, पांच सौ पद्यों की रचना पंचशती और सात सौ पद्या की रचना सप्तशती कहने की परम्परा भी है। शतककाव्य कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि उस समय नापतोलकर 100 ही पद्य मिलेगें उस रचना में पद्यों की संख्या सौ से कम या अधिक भी हो सकती हैं परन्तु प्राचीन परम्परा के अनुसार सौ से अधिक पद्य हो सकते थे,

परन्तु कम नहीं होते थे, ऐसी धारणा थी।

शतकों की परम्परा कब शुरू हुई? इस विषय पर निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि हर्षवर्धन के महाकवि बाणभट्ट का चण्डीशतक' प्राचीनतम शतकों में से एक है, जो प्रसिद्ध स्तोत्र काव्य है परन्तु शतकपरम्परा भर्तृहरि के तीनों शतकों की रचना के बाद ही लोकप्रिय हुई है, इसी कारण शतक-काव्यों के इतिहास में सबसे पहला नाम मर्तृहरि का ही आता है। इनके द्वारा रचित तीन शतक नीति शतक 2. श्रृङ्गार शतक 3. वैराग्य शतक संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं।

भर्तृहरि की रचनाएँ जितनी लोकप्रिय व प्रसिद्ध हुई हैं, उनका स्थितिकाल और व्यक्तित्व उतना ही अज्ञात व अन्धकारमय है इनके नाम से मुक्तक पद्यों के तीन संकलन प्राप्त होते हैं। नीतिशतक,-श्रृङ्गारशतक, वैराग्यशतक यद्यपि इनके नाम से पता चलता है कि प्रत्येक रचना में 100-100 पद्यहोगें तथापि नीतिशतक में 126 श्रृङ्गारशतक में 104 और वैराग्य शतक में 141 पद्म हैं, नाम के अनुरूप ही इन सभी के विषय है।

भर्तृहरि के समय और जीवन के विषय में अनेक मत एवं किंवदन्तियाँ भी हैं, जनश्रुति के आधार पर ये महाराज विक्रमादित्य के बड़े भाई थे कुछ विद्वान भर्तृहरि को वाक्यपदीय के रचयिता, व्याकरणाचार्य भर्तृहरि से अभिन्न मानते हैं, चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार इनकी मृत्यु 650 ई. में हुई।

इसी भर्तृहरि को यपदीयम् एवं तीनों शतकों का रचयिता लेखक कीथ ने कहा है इनके शतकों का अध्ययन करने से पता चलता कि ये वैदिकधर्मावलम्बी ही नहीं प्रत्युत पूर्ण अद्वैतवादी भी थे उन्हें वैदिक आचार-विचार एवं पुराणों पर पूर्ण आस्था थी। उन्हें संसार का अच्छा अनुभव था। नीतिशतक में मनुस्मृति और महाभारत की गम्भीर नैतिकता, कालिदास की सी प्रतिभा के साथ प्रस्फुटित हुई है। विद्या, वीरता, मैत्री, साहस, परोपकार, उदारता, उद्यम आदि जैसे उदात्त गुणों को ग्रहण करने का कवि ने आग्रह किया है-

येषां न विद्या तपो न दानं

ज्ञानं न शीलं न गुणों न धर्मः।

ते मृत्युलोके भारभूता,

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

विद्वानों के अनुसार शतकत्रय का क्रम भर्तृहरि के जीवन में इस किंवदन्ती को पुष्ट करता हुआ प्रतीत होता है, जिसके अनुसार भर्तृहरि स्वयं एक राजा थे. एक बार किसी साधु महात्मा ने एक अमरफल लाकर राजा को दिया अपनी रानी पिंगला से अत्यधिक प्रेम करने के कारण राजा ने वह फल रानी को दे दिया, रानी ने वह फल स्वयं खाने की बजाए अपने किसी प्रियतम व्यक्ति को दे दिया उस व्यक्ति ने ले जाकर नाचने वाली किसी वैश्या को दे दिया, क्योंकि उस व्यक्ति को वह वैश्या प्राणों से भी प्रिय थी वेश्या ने सोचा कि इस अमर फल को खाकर इस वैश्य जीवन में मैं अमर होकर क्या करूंगी।

अतः उसने वह फल दीर्घायु की कामना से राजा को दे दिया। फल को देखते ही राजा सब कुछ समझ गया और उन्हें अपनी पत्नी राज्य अपने कार्य से विरक्ति हो गई। इस प्रकार युवावस्था में सम्भवतः उन्होंने 'नीतिशतक' लिखा। विवाह के बाद अपनी पत्नी पर अत्यधिक आसक्त होने के कारण 'श्रृङगार शतक' लिखा और अपनी पत्नी की कपटता के कारण सबसे विरक्ति हो जाने पर 'वैराग्य शतक'' लिखा।

नीतिशतक

मर्तृहरि ने 'नीतिशतक' में व्यावहारिक जीवन की विषम परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके शतकों से संकलित पद्य अनेक ग्रन्थों में मिलते हैं जिनमें मूर्खो की निन्दा, सज्जनों की प्रशंसा, परोपकार, धैर्य, दैव भाग्य तथा कर्म की महिमा का वर्णन किया गया है परोपकार पद्धति से सङ्कलित निम्नलिखित पद्य में सानुप्रास पदावली का लालित्य भाव सुन्दरता को अत्यधिक बढ़ा देता है जैसे-

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा

स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिनिः पूरयन्तः।

परगुण- परमाणून पर्वतीकृत्यनित्यं,

निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।

यथासंख्य अलंकार का सुन्दर प्रयोग कवि ने इस लघुकाव्य पद्य में किया है-

मृगमीन सज्जनानां तृण जल सन्तोषविहितवृतीनाम्।

लब्धक-धीवर पिशुना निष्कारणवैरिणो जगति।

कवि भर्तृहरि ने अपने नीतिशतक में कहीं कर्म की प्रशंसा की है **"नतस्तत्कर्मभ्यो विधिरदि ने येभ्यः प्रभवति।**

तो कहीं पर कवि भाग्य की स्तुति में सलंग्न है कही धन का गुणगान करता है तो कहीं स्वाभिमान पर बल देता है, सर्व कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्यानुरूपं फलमु। इस प्रकार भर्तृहरि की रचना नीतिशतक संस्कृत साहित्य कविता का अनुपम हार है।

श्रृङ्गार शतक

प्रस्तुत शतक काव्य में भर्तृहरि ने पुरुष स्त्री पर प्रभावशाली श्रृद्ध गार व स्त्रियों के हाव-भाव का विस्तृत वर्णन किया है। श्रृङ्गार शतक में कवि ने नारी के हृदय की सच्ची परख की है। कवि ने इसे मधुरशैली में वर्णित किया है कि स्त्रियों कैसे हाव-भाव, चंचल, चितवन यौवन की मादकता और अगों की मोहकता से पुरुषों पर कैसा जादू डाल देती हैं -

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षा कटाक्षा

स्निग्धा वाचो लज्जितान्ताश्च हासाः।

लीलामन्द प्रस्थित च स्मितं च

स्त्रीणामेतदभूषणं चायुधं च।।

श्रृगारशतक के कुछ पद्यों में ऋतुओं का वर्णन भी कि कतिपय पद्य यौवन के विकारों से प्रभावित न होने वाले से सम्बद्ध हैं, तो कहीं-कहीं स्त्रियों की निन्दा भी की गई है, जैसे-

कामिनी काय कान्तारे च पर्वत-दुर्गमे।

मा सञ्चर मन पान्य तवास्ते स्मर तस्कर।।

ऋतुओं का वर्णन कवि ने कामोद्दीपन की दृष्टि से किया है, जैसे वसन्त की उद्दीपकता पर कवि का दृष्टिकोण इस प्रकार हैं-

सहकार - कुसुम - केसर-निकर भरामोद-मूर्च्छित-दिगन्ते।

मधुर-मधु विधुर मधुपे मधौ भवेत्करयनोत्कण्ठा।।

इस शतक के अनेक ऐसे पद्य है जिनमें वेश्याओं की निन्दा करते हुए ऐसे लोगों की प्रशंसा की गई है जो स्त्रियों के रूप जाल में नहीं फंसते कामदेव शूर से शूर पुरुष का भी गर्व चूर-चूर कर देता है।

वास्तव में कवि ने पहले श्रृङगार रस के आकर्षण का चित्रण प्रस्तुत करके, क्रमानुसार उसकी अस्थिरता दिखलाकर शान्त रस को ही प्रधानता दी हैं। इस प्रकार श्रृङ्गार के रूप में कवि ने नैतिक आदर्श की पवित्र धारा प्रवाहित की हैं।

वैराग्य-शतक

वैराग्य शतक में कवि ने सांसारिक भोगों में लिप्त मनुष्यों के प्रति करुणायुक्त होकर संसार की सारहीनता तथा वैराग्य की आवश्यकता समझाई है, इसमें आकर्षण से विकर्षण की ओर, प्रणय से अप्रणय की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत होता है, इनकी दृष्टि में तपस्वी जीवन ही श्रेयस्कर है. सांसारिक भोगों का भोग करते हुए मनुष्य स्वयं समाप्त हो जाता है, किन्तु विषय तो यथावत् ही रह जाते हैं, इस भाव को कवि ने बड़ी ही कुशलता से प्रस्तुत किया है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।।

भर्तृहरि ने तृष्णा, रूपादि विषय, याचना गर्व आदि की निन्दा करते हुए. वृद्धावस्था सन्तोष और शान्ति काल की महिमा, विरक्तता, संसार की अनित्यता, योगी आदि विषयों का वर्णन करते हैं इनके मतानुसार एक निर्लिप्त मुनि भी ऐश्वर्यशाली सम्राट के तुल्य ही सुख का अनुभव करता है, यद्यपि दोनों के सुख के मापदण्ड भिन्न-भिन्न है

महीं रम्या शय्या विपुल पधानं भुजलता,

वितानं चाकाश व्यजनमनकूलोऽयमनिलः।

स्फुरद्दीपश्चन्द्रो विरतिवनिता सगमुदित

सुख शान्तः शेते मुनिरतनुभूतिर्नृप इव।।

भर्तृहरि की शैली प्रसादगुणमयी, मुहावरेदार और परिष्कृत हैं. इसमें प्रवाह, पदलालित्य व अभिव्यक्ति हैं। इन्होंने वैदर्भी रीति को अपनाया है, भाषा सरल, सुबोध छन्दों की विविधता, विषय की रोचकता तथा सूक्तियों की सुन्दरता भर्तृहरि के काव्यों को और भी अधिक काव्यात्मक बना देती है।

अमरुकशतक

कवि अमरू या अमरुक द्वारा रचित "अमरूक शतक" श्रृङ्गार प्रधान मुक्तक- काव्यों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसमें पद्यों की संख्या 90 से 115 तक प्राप्त होती है। एक किंवदन्ती के अनुसार अमरू नाम के एक राजा के मर जाने के बाद शंकराचार्य ने उनके शरीर में प्रवेश करके विषय सुखों का भोग करने के अनन्तर इसकी रचना की थी, परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार अमरूक नामक कोई अन्य विद्वान थे, जिन्हें कश्मीरी माना गया है, अमरूक का काल अनिश्चित है, विद्वानों के आपसी मतभेद के बाद सर्वसम्मत मत से इनका समय 700-750 ई. के आस-पास स्वीकार किया है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इनकी रचना अमरुशतक दाम्पत्य प्रेम के सरस और आवेगवूर्ण क्षणों की मधुर अभिव्यक्ति है, अमरुक की कविता अत्यन्त मनोहारिणी है. इनके मुक्तक पद्य रस से ओत-प्रोत हैं। अमरूक शतक में प्रेम का संजीव चित्रण है। इसमें कामी कामिनियों की विभिन्न मनोवृत्तियों का उनके आमोद-विषाद का, कोप व अनुराग का मान व प्रसादन का हर्ष तथा रोदन का त्याग व अधीरता का सूक्ष्म वर्णन किया गया है। अमरूक ने जिस श्रृङ्गार का चित्रण किया है वह यद्यपि कहीं 2 उद्दाम भी हो गया है। तथापि उनके काव्यों में भावों की कोमलता विचारों की शिष्टता दिखाई देती है।

भल्लट शतकः

"मल्लटशतक" कश्मीरी कवि भल्लट की रचना है, इनके पद्यों का उद्धरण सर्वप्रथम आनन्दवर्धनाचार्य के ध्वन्यालोक में मिलता है तथा बाद में क्षेमेन्द्र, अभिनवगुप्त और मम्मट ने भी इनके उद्धरण दिए हैं। भल्लट का काल नवम् शताब्दी का उत्तरार्ध और दशम् शताब्दी का प्रथम चरण माना जा सकता है। "भल्लटशतक" में तत्कालीन समाज के उच्च वर्ग के अयोग्य व्यक्तियों पर कटाक्ष किया गया है जैसे

पातः पूष्णोभवति महते नोपतापय यस्मात्

कालेनास्तं क इह न ययुर्यान्ति यास्यन्ति चान्ये।

एवावन्तु व्यथयतितरां लोकबाह्यैस्तमोभि-

रितस्मिन्नेव प्रकृतिमहित व्योम्नि लब्धोऽवकाशः।।

प्रस्तुत शतक काव्य में कवि ने कहीं-कहीं पर श्रृंगार पद्यों का भी प्रयोग किया है, जो सरल व सुबोध शैली में होने के कारण बड़े ही हृदयाकर्षक हैं।

सूर्यशतक

सूर्यशतक के रचयिता महाकवि मयूरभट्ट का समय 7वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जाता है। विद्वानों की मान्यता है कि ये महाकवि बाणभटटट के निकट सम्बन्धी थे इनके विषय में एक किंवदन्ती हैं कि इन्होंने सूर्य की महिमा का 100 श्लोकों में वर्णन करके उन्होंने अपने असाध्य रोग का निवारण किया था।

इस किंवदन्ती को 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार मम्मट ने भी समर्थन दिया है। मयूरकवि ने यह स्तुति स्रग्धरा छन्द में लिखी है। अनुप्रासयुक्त पदावली का प्रयोग करके कवि सूर्य के अनेक अड्गों, साधनों का वर्णन किया हैं सूर्यशतक का आरम्भिक श्लोक है:

जम्भारातीम कुम्भोद भवमिव दधतः सान्द्रसिन्दूररेणुं

रक्ताः सिक्ता इवौधरूदयगिरितटी-धातुधाराद्रवस्य।

आयान्त्या तुल्यकाल कमलवनरूचेवारूणा वो विभूत्यै

भूयासुर्भासयन्तो भुवनमभिनवा भानवो मानवीयाः।

चण्डी शतक

चण्डीशतक की रचना महाकवि बाणभटट द्वारा की स्तुति में स्रग्धरा छन्द में 100 पद्यों की रचना की अनुप्रासयुक्त पदावली, दीर्घ समास, जटिल वाक्य रचना सूर्यशतक और चण्डीशतक में समान रूप से मिलती है। परन्तु अपनी दीर्घता व किलष्टता के कारण ये दोनों ही शतक भक्तों में लोकप्रिय नहीं हो सके। ऐसा भी कहा जाता है कि सूर्यशतक व चण्डीशतक दोनों की

रचनाएं कवियों द्वारा आपस में शाप देने से हुई है। चन्डीशतक में बाणभट्ट ने भगवती देवी की अनेकों शक्तियों, रूपों आदि का वर्णन किया है। जैसे देवी की अमोघ सहायताविषयक वर्णित श्लोक हैं-

विद्राणे रूद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे

जाताशड़ के शशाड के विरमति मरूति त्यक्तवैरे कुबेरे

वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषमतिरूषं पौरूषोपघ्ननिघ्नं

निर्विघ्नं निघती वः शमयतु दुरितं भूरिभावा भवानी।।

इस प्रकार कालान्तर में हमारे श्रेष्ठ कवियों की प्रतिभा से हमारा शतक साहित्य बहुत ही समृद्ध होता चला गया। आगे चलकर अनेक शतक काव्य और अस्तित्व में आए जैसे गोवर्धनाचार्य की आर्यासप्तशती, हाल की गाथा सप्तशती, धनदराज का श्रृङ् गारधनदशक इत्यादि शतक काव्य प्रसिद्ध हैं।

संस्कृत साहित्य के अंतर्गत बहुत-सी ऐसी पद्य-रचनाएँ हैं, जिन्हें महाकाव्य नहीं कहा जाता, फिर भी काव्य की सामान्य परिभाषा में ये रचनाएँ आती हैं। इन्हें खण्डकाव्य, शोध कार्म गीतिकाव्य, मुक्तक, स्तोत्रकाव्य इत्यादि कहा जाता है। शोध कार्य में महाकाव्य से भिन्न रूप के पद्य-काव्य की विधाओं का क्रमशः यहाँ विवेचन किया जा रहा है।

खण्डकाव्य

लघु कथानक पर आश्रित काव्य को 'खण्डकाव्य' कहा जाता है। इसे गीतिकाव्य भी कहते हैं, यदि कोमल भावों को कवि अपनी अनुभूति और कल्पना से पूर्ण करके संगीतमयी भाषा में प्रकट करे। संस्कृत भाषा में 'ऋतुसंहार' तथा 'मेघदूत' उत्कृष्ट खण्डकाव्य हैं।

ऋतुसंहार

यह महा कवि कालिदास की रचना है। इसमें छः सर्गों में ग्रीष्म आदि ऋतुओं का काव्यमय वर्णन है। इन ऋतुओं के वर्णन में कालिदास ने शृङ्गार भावना को प्रमुखता दी है। इसलिए सर्वत्र नायक-नायिका के संवाद के रूप में ऋतुओं को उपस्थित किया गया है। ऋतु परिवर्तन से जहाँ बाह्य प्रकृति में नवीनता आती है, वहाँ युवक-युवतियों में विविध प्रणय क्रीड़ाओं तथा

शृङ्गार की चेष्टाओं का उदय दिखाया गया है। वसन्त का वर्णन करते हुए महाकवि कहता है कि -

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सप:

स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।

सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः

सर्व प्रिये चारुतरं वसन्ते ।।

प्रिये! जिधर देखो आनन्द ही आनन्द है। वसन्त के आते ही वृक्ष फलों से लद गए हैं। जल में कमल खिल गए हैं। स्त्रियाँ प्रियों से मिलने के लिए उत्सुक हो गई हैं। पवन सुगन्धपूर्ण हो गया है। संध्या सुहावनी हो गई है। दिन आकर्षक लगते हैं। सचमुच वसन्त में सब कुछ अधिक सुन्दर हो गया है।

ऋतुसंहार कालिदास की युवावस्था की रचना कही जाती है। उनके उत्कृष्ट काव्य-गुणों के अंकुर इसमें दिखाई पड़ते हैं। रूपक और उपमा जैसे अलंकारों का प्रयोग एक तरुण कवि के रूप में कालिदास ने किया है।

मेघदूत

महाकवि कालिदास की यह रचना यद्यपि केवल 120 श्लोकों की है, तथापि इसने इन्हें अपूर्व ख्याति दी है। मेघदूत प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य है। इसमें एक ऐसे यक्ष की विरह-व्यथा का वर्णन है, जो एक वर्ष के लिए अपनी प्रिय पत्नी से दूर कर दिया जाता है। उसकी पत्नी हिमालय में स्थित अलकापुरी में यक्षों की नगरी में रहती है। यक्ष स्वयं (मध्य भारत में स्थित) रामगिरि में प्रवास कर रहा है। वर्षाकाल के आरम्भ में वह मेघ को दूत बनाकर अपना सन्देश प्रियतमा के पास भेजता है।

मेघदूत में दो भाग हैं-पूर्वमेघ और उत्तरमेघ। पूर्वमेघ में रामगिरि से अलकापुरी तक मेघ के मार्ग का रोचक वर्णन है। भारतवर्ष के प्राकृतिक सौंदर्य का सुन्दर चित्र कालिदास ने इसमें खींचा है। उज्जयिनी का वर्णन अपेक्षाकृत विस्तार से किया गया है। उत्तरमेघ में अलकापुरी के वर्णन के प्रसंग में यक्ष के भवन तथा उसकी विरहिणी प्रियतमा का चित्र अंकित किया गया है।

उसे मार्मिक संदेश भी दिया गया है। यक्ष मेघ को एक चेतन संदेशवाहक मानता हुआ भी उसके स्वाभाविक गुणों से अवगत है। इसलिए वह कहता है-तुमसे प्रार्थना है कि जब तुम मेरी प्रिया के निवास स्थान पर पहुँचो, तो बिजली को जोर से चमकने न देना। मेरी पत्नी कहीं स्वप्न देख रही होगी या मेरा ध्यान कर रही होगी, तो तुम्हारा गर्जन सुनकर जाग जाएगी।

मेघदूत में विरह और प्रणय का अद्भुत चित्र खींचा गया है। पूरे काव्य में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है। कालिदास ने इसमें आभ्यन्तर और बाह्य दोनों प्रकृतियों का सुरम्य समन्वय किया है। मेघदूत के आधार पर संस्कृत में दूत-काव्यों की परम्परा चल पड़ी है। विभिन्न कवियों ने विभिन्न शताब्दियों में अनेक संदेश काव्य लिखे, जैसे-जम्बू कवि का चन्द्रदूत, धोयी कवि का पवनदूत, वेंकटनाथ, रूपगोस्वामी, वामनभट्ट बाण के पृथक्-पृथक् हंसदूत इत्यादि। शताधिक दूतकाव्य मेघदूत के अनुकरण पर लिखे गए हैं।

गीतिकाव्य

भावानामात्मनिष्ठानां कल्पना वलितं लघु।

स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते।।

हृदय में स्थित भावों और कल्पनाओं को गेय रूप में प्रकट करने वाले काव्य को गीतिकाव्य कहा जाता है।

संस्कृत में गीतिकाव्यों की समृद्ध परंपरा है। ऋग्वेद में स्तुतिपरक मन्त्रों के माध्यम से सर्वप्रथम गीतियाँ लिखी गई थीं, जिनमें ऋषियों ने अपने कोमल भावों को प्रकट किया था। ऋग्वेद के अन्य सूक्तों में भी हमें सुख और दुःख को प्रकट करने वाले गीत मिलते हैं, जिनमें हिरण्यगर्भ आदि ऋषियों ने व्यक्तिगत अनुभवों को निश्छल भाव से प्रकट किया है। गीतिकाव्य गीतों को लोग अवकाश के समय में या विशिष्ट अवसरों पर गाते हैं।

इनमें भक्ति या शृङ्गार से सम्बद्ध गीत होते हैं। इनकी रचना ऐसे छन्दों में होती है, जिन्हें सरलता से गाया जा सके। सभी लोग इन गीतों को सुनकर भावविभोर हो उठते हैं। गीतिकाव्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसमें शृंगार और भक्ति से सम्बद्ध प्रबन्धात्मक और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य आते हैं। सभी स्तोत्रकाव्य गेय होने से गीतिकाव्य की श्रेणी में

आते हैं। मुक्तककाव्यों में गेयता पायी जाने के कारण उन्हें भी विद्वानों ने गीतिकाव्य की श्रेणी में रखा है।

गीतगोविन्द

यह जयदेव रचित एक अत्यन्त लोकप्रिय गीतिकाव्य है। जयदेव, बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की राजसभा में रहते थे। ये कृष्णभक्त कवि थे। इस काव्य में राधा-कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। इसमें 12 सर्ग हैं, जिनमें राधा-कृष्ण की प्रेम-लीला की झाँकियाँ गीतों के द्वारा प्रकट की गई हैं। इसके प्रत्येक अक्षर में संगीत है। यह मधुर, कोमल-कान्त पदावली का है। उदाहरण के लिए-

ललितलवङ्गलता-परिशीलन-कोमलमलयसमीरे।

मधुकरनिकरकरम्बित-कोकिल-कूजितकुञ्जकुटीरे।।

यहाँ लम्बा समास होने पर भी शैली में मनोरमता और प्रवाह विद्यमान है। इसके प्रत्येक गीत के राग और ताल का निरूपण किया गया है। पूर्वी भारत में इसकी गान यात्रा (उत्सव-विशेष) आदि विविध अवसरों पर किया जाता है। संस्कृत के गीतिकाव्यों में यह श्रेष्ठ है।

चैरपञ्चाशिका

यह 50 श्लोकों का गीतिकाव्य है, जिसमें किसी राजकुमारी से कवि के गुप्त प्रेम का वर्णन है। इस प्रेम-प्रसंग का पता जब राजा को चलता है, तब वह कवि को प्राणदण्ड का आदेश देता है। जब कवि दण्ड के लिए ले जाया जा रहा था, तब उसने राजकुमारी के साथ बिताए सुख की स्मृति में 50 श्लोक पढ़े। इन्हें सुनकर राजा अभिभूत हो गया।

उसने कवि को राजकुमारी से विवाह करने की अनुमति दे दी। इस काव्य के विषय में उपर्युक्त कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि कवि का नाम चैर था, जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है। कतिपय विद्वानों के मतानुसार इसके रचयिता कवि बिल्हण थे। इस काव्य के सभी श्लोक वसन्ततिलका छन्द में हैं तथा 'अद्यापि' से इन श्लोकों का आरम्भ होता है, जैसे-

अद्यापि तां भुजलतार्पितकण्ठपाशां

वक्षःस्थलं मम पिधाय पयोधराभ्याम्।

ईषन्निमीलित-सलीलविलोचनान्तं,

पश्यामि मुग्धवदनां वदनं पिबन्तीम्।।

मुक्तककाव्य

मुक्तककाव्य भी गीतिकाव्य की श्रेणी में आते हैं। इनका प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, प्रबन्धात्मक नहीं। प्राचीन काव्यशास्त्री मुक्तकों को उत्कृष्ट काव्य नहीं मानते थे, किन्तु आनन्दवर्धन ने मुक्तकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मुक्तकों में प्रत्येक श्लोक चमत्कारपूर्ण होता है। विभिन्न युगों में कई प्रकार के मुक्तक काव्य संस्कृत भाषा में लिखे गए।

भर्तृहरि का शतकत्रय

भर्तृहरि का समय सातवीं शताब्दी ई. माना जाता है। इन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर प्रायः सौ-सौ श्लोकों के तीन संग्रह बनाए शृंङ्गारशतक, नीतिशतक और वैराग्यशतका इनमें प्रत्येक श्लोक अपने में परिपूर्ण है। शृङ्गारशतक में काम और विलास की नाना स्थितियों, स्त्रियों के हाव-भाव, कटाक्ष आदि का सुन्दर वर्णन किया गया है। काम के महत्त्व की घोषणा करते हुए कवि कहता है कि नारी का प्रत्येक कर्म मोहक होता है। बहुत कम लोग काम के दर्प को चूर करने में समर्थ होते हैं-कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः।

नीतिशतक में कवि ने विद्या, वीरता, सज्जनता आदि उदार वृत्तियों का वर्णन करते हुए मूर्खता, लोभ, धन, दुर्जनता आदि की निन्दा भी की है। इसके श्लोक जन-समाज में बहुत प्रचलित हैं। इसमें प्रचुर स्वाभाविकता है।

वैराग्यशतक में कवि ने संसार की असारता और वैराग्य की महत्ता का प्रतिपादन किया है। इसमें काव्य-प्रतिभा और दार्शनिकता का अपूर्व समन्वय है। भर्तृहरि संस्कृत में मुक्तक गीतिकाव्य की परम्परा के प्रवर्तक कवि हैं। भाषा की सरलता के कारण इनके भाव पाठकों पर सीधा प्रभाव डालते हैं। अनेक छन्दों में विषय को रोचक बनाकर अनुरूप उदाहरण देकर सूक्तियों से भर्तृहरि श्रोता को तत्काल आकृष्ट कर लेते हैं।

अमरुशतक

संस्कृत गीतिकाव्यों में अमरुशतक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। यद्यपि यह शतक है, किन्तु इसमें प्रायः 150 श्लोक मिलते हैं। निश्चय ही अमरु कवि के श्लोकों में दूसरे कवियों ने भी

अपने श्लोक मिलाए होंगे। अमरुशतक का सर्वप्रथम उल्लेख आनन्दवर्धन (850 ई.) ने किया। वे कहते हैं कि अमरु का प्रत्येक श्लोक भावों की उत्कृष्टता के कारण अपने में ही पूर्ण काव्य है।

यह शृङ्गारपूर्ण श्लोकों का संग्रह है। शृंगार के सभी पक्ष इसमें चित्रित हैं। कहीं मानवती नायिका के अनुराग का चित्र है, तो कहीं प्रियतम के लौटने पर उसके क्रोध के दूर होने का वर्णन है। समासों का अभाव और शब्दों का सुपरिचित होना इसके आकर्षण का सबसे बड़ा कारण है। अमरु कवि प्रेम के श्रेष्ठ चित्रकार हैं। इनका प्रिय छन्द शार्दूलविक्रीडित है। अमरु कवि का व्यक्तित्व या समय भले ही अज्ञात हो, किन्तु उनकी काव्य-रचना अमर है।

भामिनीविलास

सत्रहवीं शताब्दी के कवि पण्डितराज जगन्नाथ ने अनेक रमणीय श्लोकों का संग्रह अपने भामिनीविलास में किया। इसमें गीत्यात्मक मुक्तक पद्यों के चार खण्ड हैं। पदलालित्य तथा अनुप्रासों के विन्यास में जगन्नाथ अद्वितीय हैं। उन्होंने गङ्गालहरी, सुधालहरी आदि छोटे स्तोत्रकाव्यों की भी रचना की। उनके अतिरिक्त पण्डितराज ने काव्यशास्त्र का महान् ग्रन्थ रसगङ्गाधर भी लिखा।

स्तोत्रकाव्य

भक्तिप्रधान गीतिकाव्यों को स्तोत्रकाव्य कहा जाता है। विभिन्न देवताओं, आचार्यों या तीर्थों की स्तुति में ये स्तोत्र लिखे गए हैं। इनका सस्वर पाठ भक्तों के हृदय में आह्लाद उत्पन्न करता है। भारतवर्ष में विभिन्न सम्प्रदायों के कवियों ने अपने-अपने सम्प्रदायों से सम्बद्ध स्तोत्रों की रचना की। इनमें भक्त कवियों के भाव व्यक्त हुए हैं।

पुष्पदन्त नामक कवि ने शिखरिणी छन्द में शिवमहिम्नः स्तोत्र लिखा था। मयूरकवि ने सूर्य की स्तुति स्रग्धरा छन्द में अपने सूर्यशतक नामक काव्य में की, जिसमें अनुप्रासों की छटा अत्यन्त आकर्षक है। बाणभट्ट ने सूर्यशतक के अनुकरण पर चण्डीशतक नामक काव्य की रचना की। बाण और मयूर दोनों का समय सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध है।

शंकराचार्य आदि ने भी अनेक स्तोत्र लिखे, जिनमें भजगोविन्दम् और सौन्दर्यल विख्यात हैं। कश्मीर में उत्पलाचार्य की शिवस्तोत्रावली, धर्माचार्य की पञ्चस्तवी तथ अभिनवगुप्त का

अनुभव निवेदन व क्रमस्तोत्र प्रसिद्ध हैं। जैन और बौद्ध कवियों ने भी अपने आचार्यों तथा गुरुओं की प्रशंसा में शताधिक स्तोत्र लिखे।

प्राकृत काव्य

संस्कृत गीतिकाव्यों के साथ प्राकृत गीतिकाव्य का भी विकास हुआ। इसमें हाल नामक कवि की गाहा सत्तसई या गाथासप्तशती बहुत प्रसिद्ध है। इसका रचनाकाल निश्चित नहीं है, किन्तु जिस प्रकार की प्राकृत भाषा इसमें प्रयुक्त हुई है, वह 200 ई. में प्रचलित थी। गाथासप्तशती में प्रदर्शित जीवन संस्कृत काव्य में सामान्यतया प्रदर्शित जीवन से भिन्न है। इसमें ग्रामीण जीवन, कृषक, गोपालक, उद्यान में खेलने वाली कन्याएँ आदि चित्रित हैं। ग्रामीण स्त्रियों का स्वाभाविक वर्णन इसमें किया गया है। इसमें सात सौ प्राकृत गाथाएँ (पद्य) हैं।

गाथासप्तशती के अनुकरण पर जयदेव के समकालिक गोवर्धनाचार्य ने आर्यासप्तशती की रचना की जो संस्कृत भाषा में 700 मुक्तक रूप में लिखे गए आर्या छन्द के श्लोकों का संग्रह है। हिन्दी में कवि बिहारी ने भी इन्हीं सप्तशतियों के अनुकरण पर अपनी सतसई की रचना की थी। इस प्रकार छोटे छन्द में शृंगार का पूरा चित्र खींचने का प्रयास कवि ने किया है यहां उसकी लम्बी परम्परा चली है।

अन्य काव्यग्रन्थ

संस्कृत भाषा में कुछ अन्य प्रकार की पद्यात्मक रचनाएँ मिलती हैं, जिन्हें गीतिकाव्य, नीतिकाव्य तथा उपदेशपरक काव्यों में रखा जाता है। इनमें कालिदास के नाम से प्रसिद्ध शृङ्गारतिलक तेईस श्लोकों का काव्य है, जो प्रेम के रमणीय चित्रों से भरा है। इसमें अमरु कवि के भाव झलकते हैं। दूसरा काव्य घटकर्परकाव्य है, जो 22 श्लोकों में यमक के प्रयोगों से भरा है। इसलिए इसे यमककाव्य भी कहते हैं।

संस्कृत भाषा में नैतिक सूक्तियों के कई संग्रह मिलते हैं। दामोदर भट्ट (800 ई.) ने कुट्टनीमत नामक व्यंग्य ग्रन्थ लिखा, जिसमें पाठकों को सांसारिक नीति के विषय में शिक्षा क्षेमेन्द्र ने समयमातृका, नर्ममाला, कलाविलास, दर्पदलन, सेव्यसेवकोपदेश, चतुर्वर्ग-संग्रह इत्यादि ग्रन्थों में हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में समकालिक जीवन का चित्र खींचा है। अतः संस्कृत भाषा में अनेक प्रकार की पद्य रचनाएँ प्राप्त होती हैं, जो पाठकों को धर्म, अर्थ, काम और

मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करने में सहायता देती हैं। इनका अनुशीलन आज भी आनन्ददायक तथा शिक्षाप्रद है।

श्लेषकाव्य

श्लिष्ट काव्य या अनेकार्थक काव्यों की एक परम्परा ग्यारहवीं शताब्दी से चली आ रही है। इनमें श्लिष्ट पदावली के प्रयोग से एक ही काव्य में दो या अधिक कथाएँ एक साथ चलती हैं। इस प्रकार के काव्यों में सन्ध्याकरनन्दी का रामचरित, धनञ्जय का राघवपाण्डवीय प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे कुछ अन्य प्रमुख काव्य हैं- विद्यामाधव (बारहवीं शताब्दी) कृत पार्वतीरुक्मिणीय, माधवभट्ट (बारहवीं शताब्दी) कृत राघवपाण्डवीय, दैवज्ञसूर्य (सोलहवीं शताब्दी) कृत रामकृष्णविलोमकाव्य, हरदत्तसूरि (सोलहवीं शताब्दी) कृत राघवनैषधीय, चिदम्बर कवि (सत्रहवीं शताब्दी) कृत राघवपाण्डवयादवीय एवं वेंकटाध्वरी (सत्रहवीं शताब्दी) कृत यादवराघवीय।

संस्कृत साहित्य में आरम्भ काल से ही कवयित्रियों का उल्लेख प्राप्त होता है। ऋग्वेद में ऋषिकाओं के अनेक मन्त्र संगृहीत हैं, जो काव्य की दृष्टि से अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। लौकिक संस्कृत में भी अनेक कवयित्रियों के पद्य सुभाषित सङ्ग्रहों में मिलते हैं। इनमें विज्जका, सुभद्रा, फल्गुहस्तिनी, इन्दुलेखा, मारुला, विकटनितम्बा, शीलाभट्टारिका के नाम प्रमुख हैं।

कवयित्रियों ने मुक्तक तथा प्रबन्धात्मक दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं। इनमें रामभद्राम्बाविरचित रघुनाथाभ्युदय, तिरुमलाम्बा कृत वरदाम्बिकापरिणयचम्पू एवं गङ्गादेवी कृत वीरकम्परायचरित तथा मधुराविजय प्रसिद्ध प्रबन्धकाव्य हैं। बीसवीं शताब्दी में पण्डिता क्षमाराव का नाम उल्लेखनीय है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. बहादुरचन्द छाबड़ा संस्कृत साहित्य का इतिहास।

2. संस्कृतसाहित्य काविशद् इतिहास डॉ. पुष्पा गुप्ता।

3. नीतिशतक श्लोक सं. 13-18

4. संस्कृत साहित्य का विश्द इतिहास डॉ. पुष्पा गुप्ता।

5. श्रृङ्गार शतक श्लोक सं. 84

6. वही श्लोक सं. 37

7.वैराग्य शतक श्लोक सं. 12

8.डॉ. पुष्पा गुप्ता कृत संस्कृत साहित्यका विशद इतिहास

9. सूर्यशतक श्लोक सं. 1.

11. बाण भट्ट चण्डी शतक श्लोक सं. 13

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL